❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्। - सामवेद 1325

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो !

आप हमें सब पापाचारणों से अवश्य दूर करें।

O the luminous Lord ! kindly lead us away from all evil & sinful deeds.

वर्ष 41, अंक 8 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 11 दिसम्बर, 2017 से रविवार 17 दिसम्बर, 2017

विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

91वें बलिदान दिवस (23 दिसम्बर) पर विशेष

आर्यों, श्रद्धानन्द का बलिदान याद करो

...बलिदान हमें जड़ता और निष्क्रियता से हटाकर कुछ करने की भावना जाग्रत करते हैं। आत्मचिन्तन की ओर प्रेरित करते हैं। सोच एवं विचार देते हैं-क्या खोया? कहां के लिए चले थे? कहां जा रहे हैं? स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हमें पुकार रहा है। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरित कर रहा है-उठो! जागो! संगठित हो जाओ। मिलकर चलो। ऋषि के मिशन को याद करो।....

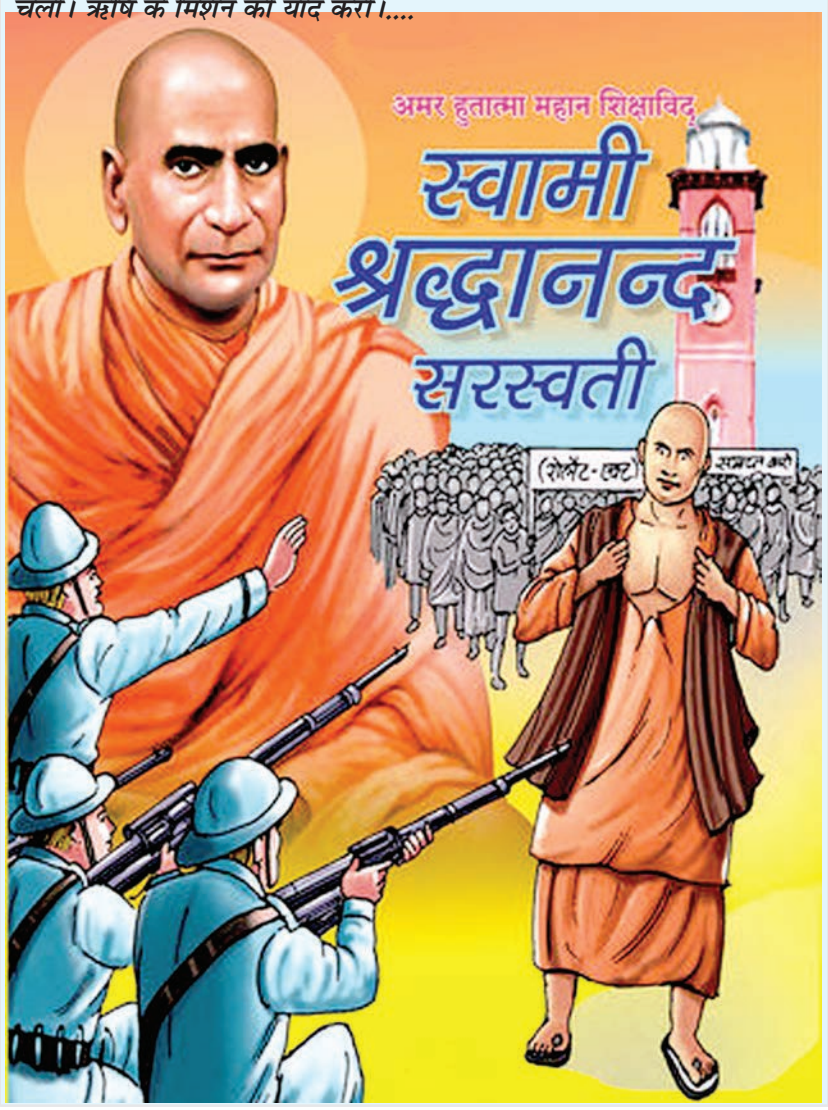

– डॉ. महेश विद्यालंकार

आर्य समाज का अतीत इतने तपस्वी, त्यागी और बलिदानी महापुरुषों से भरा पड़ा है। पढ़ सुन व सोच कर हृदय श्रद्धाभावना से भर आता है। इस संगठन ने जो देश, धर्म, जाति, संस्कृति वेद विद्या आदि के क्षेत्र में सत्य-यथार्थ दिशा बोध कराया। उसके लिए इतिहास सदा ऋणी रहेगा। वैदिक धर्म के उद्धारक प्रचारक व प्रसारक पुण्यात्मा ऋषीवर को शत-शत नमन और प्रणाम जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रेरित होकर, जिन्होंने वैदिक धर्म की मशाल को जलाये रखने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उस परम्परा की अग्रणी पंक्ति में स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानन्द का नाम बड़े आदर व सम्मान से लिया जाता है।

स्वामी श्रद्धानन्द सच्चे अर्थों में ऋषि दयानन्द के उत्तराधिकारी थे। उन्होंने जो आदर्श, मन्तव्य सिद्धान्त दिए। उन्हें श्रद्धानन्द ने क्रियात्मक रूप दिया। उनकी अपने गुरु ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा-निष्ठा, समर्पण प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। उनका शिक्षा, नारी उत्थान, शुद्धि राजनीति समाज सुधार आदि क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान है। स्वामी श्रद्धानन्द तप-त्याग तपस्या दृढ़ता, आत्मविश्वास आदि की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने जो प्रेरक कार्य किए हैं, वेसे आज तक कोई नहीं कर सका। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना इसका जीवन्त उदाहरण है। जिस तरह से और जिन परिस्थितियों में उस महापुरुष ने इस संस्था को बनाया, उसे सुनकर हृदय श्रद्धा से झुक जाता है। मगर पीड़ा यह है कि आज स्वामी श्रद्धानन्द का स्मारक गुरुकुल कांगड़ी अपने मूल उद्देश्यों, विचारों और प्रभाव की दृष्टि से हट और कट रहा है। स्मारक ढह रहा है,यह चिन्तनीय है।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन के पूर्वपक्ष के चित्र में नास्तिकता, खानपान की अपवित्रता, आचरण की मलिनता, भोग विलास की प्रधानता, धर्म-कर्म, ईश्वर भक्ति आदि में तटस्थता मिलती है। देव दयानन्द के अद्वितीय चुम्बकीय, व्यक्तित्व के दर्शन और अगाध पाण्डित्य के स्पर्श से मुंशीराम के ज्ञानचक्षु खुल गए। जीवन की दिशा बदल गई। कायाकल्प हो गया। सुप्त संस्कार जाग उठे। जीवन का सारा रंग-ढंग बदल गया। हृदय में वैचारिक तूफान उठा। परिवर्तन आया। प्रभु-कृपा हुई। पतित जीवन से उठकर प्रेरक जीवन की ओर चल पड़े। सत्य-श्रद्धा व विवेक की भावना से ओत-प्रोत हो गये। मुंशीराम से श्रद्धानन्द बन गए।

यह क्रान्तिकारी और अद्भुत प्रेरक आदर्श जीवन का पहलू युग-युग तक भूले भटके दुर्व्यसनी, भोगी विलासी संसार को सन्मार्ग का पथिक बनने के लिए प्रेरित करता रहेगा। उनके जीवन का यह परिवर्तन असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर और अश्रद्धा से श्रद्धा की ओर प्रेरणा देता रहेगा। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का यह पक्ष हम सब आर्यों को प्रेरणा व सन्देश दे रहा हे- आर्यो! उठो, जागो, अपने स्वरूप को संभालो। जीवन तथा व्यवहार में जो अनैतिकता, अधार्मिकता, दुर्व्यसन व बुराइयां आ गई हैं। उन्हें छोड़ने का संकलप लो। मिशन को आगे ले चलने के व्रती बनो। जीवन को पवित्र ओर श्रेष्ठ बनाने की भावधारा जाग्रत करो। सेवा व त्याग को जीवन में स्थान दो। मनुर्भव सच्चे अर्थ में मानव

– शेष पृष्ठ 7 पर

कोटा में स्वामी दयानन्द सरस्वती नगर आवासीय योजना का शुभारम्भ

नगर विकास न्यास (यूआईटी) कोटा (राजस्थान) ने 27 नवम्बर, 2017 को स्वामी दयानन्द सरस्वती नगर आवासीय योजना के नाम से नई आवासीय योजना का शुभारम्भ किया। रायपुरा क्षेत्र में स्थित इस आवासीय योजना में विभिन्न आयवर्ग के लोगों के लिए 99 भूखंड लॉटरी के आधार पर आवंटित किए जाएंगे। आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि 27 दिसम्बर है। यूआईटी अध्यक्ष रामकुमार मेहता ने बताया कि गरीब वर्ग के लोगों को आरक्षित दर से एक चौथाई दर पर ही भूखंड आवंटित किये जाएंगे। इस अवसर पर जिला आर्य समाज कोटा प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा एवं श्री राम कुमार मेहता ने न्यास चेयरमैन श्री राम कुमार मेहता को साफा पहनाकर व स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का चित्र भेंट कर अभिनन्दन किया। इस अवसर पर डॉ. वेद प्रकाश गुप्त, श्री लाल चंद आर्य, श्री प्रेम नाथ कौशल, पं. रामदेव, श्री रामनारायण एवं विभिन्न आर्यजन उपस्थित थे।

–अर्जुन देव चड्ढा, प्रधान

वेद-स्वाध्याय

दैवी नाव

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसो अस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये।। - अथर्व. 7/6/3
ऋषिः **अथर्वाः**।। देवता - **अदितिः**।। छन्दः **विराड्जगती**।।

शब्दार्थ - **सुत्रामाणम्** = ठीक प्रकार से रक्षा करनेवाली **पृथिवीम्** = विस्तृत आश्रय देनेवाली **द्याम्** = ज्ञान-प्रकाश वाली **अनेहसम्** = कभी हानि न पहुंचाने वाली **सुशर्माणम्** = उत्तम प्रकार के सुखवाली **सुप्रणीतिम्** = श्रेष्ठ मार्ग से ले-चलने वाली **स्वरित्राम्** = उत्तम पतवारों वाली **अस्रवन्तीम्** = कभी न चूनेवाली, अछिद्रा **अदितिम्** =परिपूर्णा, अखण्डिता प्रकृति रूपिणी दैवीं नावम् = **दैवी** (देव ईश्वर की या उसके प्राकृति देवों की) नाव पर हम **अनागसः** = निष्पाप होते हुए **स्वस्तये** = कल्याण के लिए **आरुहेम** = चढ़ें।

विनय- आओ, अब हम विकृत जीवन को छोड़ प्रकृति की ओर आएं, खण्डित अवस्थाओं से निकल अखण्डित की ओर आएं, दिति के संसार को त्यागकर अदिति का अवलम्बन ग्रहण करें। अप्राकृतिक, बनावटी, विकारमय जीवन बिताकर हमने बहुत कष्ट पाये हैं, इस भवसागर में बहुत-से गोते खाये हैं, अब तो आओ, हम अपनी प्राणरक्षा के लिए इस प्राकृतिक जीवनरूपी दैवी नाव का आश्रय लेवें। यह दैवी नाव हमें भवसागर में डूबने से बचा लेगी। हमारी ठीक प्रकार से रक्षा करेगी। तनिक देखो कि इसका आश्रय बड़ा विस्तृत है; प्राकृतिक जीवन बिताने वाले को इस महान् प्रकृति का सम्पूर्ण अवलम्बन मिल जाता है और उसे एक खुलेपन का आनन्ददायक अनुभव होता हे। ज्यों-ज्यों हमारा जीवन नैसर्गिक होता जाता है, प्राकृतिक देवों के अनुकूल होता जाता हे, त्यों-त्यों हममें ज्ञान का प्रकाश भी बढ़ता जाता है। यह प्राकृतिक जीवन हमें कभी हानि कैसे पहुंचा सकता है! यही तो हमारा स्वाभाविक, वास्तविक जीवन है, अतः यह तो हमें बड़े प्रेम से अपनी शरण देता है; हमें बड़े उत्तम प्रकार का सुख देता है। हम लोग सुखभोग ही के लिए तो विकृत जीवन पसन्द करते हैं, परनतु हमें ज्ञात नहीं कि प्राकृतिक जीवन में जो एक ऊंचा सात्त्विक उत्तम प्रकार का सच्चा सुख है उसके सामने ये बनावटी सुख तो दुःख हो जाते हैं। अहो, देखो कि यह प्रकृति अपने में इतनी अखण्डित, परिपूर्ण है कि यदि हम केवल श्रद्धापूर्वक अपने-आपको इस प्रकृति के हवाले कर दें, अपने जीवन को प्राकृतिक सीधे-सादे नियमों मे एक बार ढाल लें, तो फिर हमें और कुछ चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं रहती। प्रकृति माता अपनी उत्तम प्रणीतियों (मार्गों, उपायों) से शेष सब-कुछ अपने-आप कर लेती है। देव परमेश्वर के अपने प्राकृतिक देवों द्वारा बनाई इस दैवी नाव पर चढ़ने की केवल एक ही शर्त है, वह यह कि हम 'अनागस्' अर्थात् निष्पाप हों, प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन न करने वाले हों। बस केवल इतना करें तो हम इस नाव के सौभाग्यशाली यात्री हो जाएंगे। इतना करके हम निश्चिन्त हो जाएं कि यह कभी न चू सकने वाली ओर सद्गुणों के उत्तम पतवारों वाली नौका हमें बैठे-ही- बैठे सर्वथा कुशलपूर्वक पार लगा देगी।

- साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

जनेऊ धर्म का या राजनीति का?

कुछ समय पहले तक धर्म को ध्यान, साधना, मोक्ष, उपासना का विषय समझा जाता था लेकिन जिस तरह राजनेता धर्म को माध्यम बनाकर आये दिन वोट की राजनीति कर रहें तो उसे देखकर लगता है आने वाली नस्ले शायद यही समझें कि धर्म सिर्फ राजनीति का विषय है, आमजन का इससे कोई सरोकार नहीं है। गुजरात चुनाव बड़ी तेजी से चल रहा है वहां विकास से जुड़े मुद्दे एक तरह से खामोश हैं। पद्मावती, जनेऊ और मंदिर दर्शन ने बाकी के सब मुद्दों को पीछे छोड़ रखा है। गुजरात विधानसभा चुनावों के बीच सोमनाथ मंदिर में दर्शन के दौरान प्रवेश रजिस्टर में राहुल गांधी का नाम गैर-हिन्दू के रूप में दर्ज होने पर सियासी घमासान मचा है। तब से अब तक बहस इस बात पर ज्यादा छिड़ी है कि राहुल का धर्म क्या है? हालाँकि कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कई सबूतों के साथ सफाई दी। सुरजेवाला ने कांग्रेस उपाध्यक्ष की पुरानी तस्वीरें भी जारी कीं और इस दौरान कहा, मुझे यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि राहुल गांधी न केवल हिन्दू हैं, बल्कि जनेऊधारी हैं और पी एल पुनिया यहां तक बोल गये कि राहुल ब्राह्मण हैं। मतलब एक नेता ने उनके धर्म का बखान किया तो दूसरे ने आगे बढ़कर जाति भी बता डाली।

धर्म और संस्कार के आधार पर देखें तो जिस प्रकार भारतीय शासन के तिरंगे झंडे का विधान है उसमें तीन रंग और विशिष्ट विज्ञान है। इसी प्रकार जनेऊ का भी रहस्य है इसमें तीन दंड, नौ तंतु और पांच गांठे होती हैं, तीन धागे पृथ्वी, अन्तरिक्ष और धु-लोक सत्व, रज और तम तीन गुण का अर्थ छिपा होता है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ तीन आश्रम संन्यास में इसे उतार दिया जाता है, तीन दण्ड मन, वचन और कर्म की एकता सिखाते हैं। तीन आचरण, आदर, सत्कार और अहिंसा सिखाते है, तीन तार आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का ज्ञान देते हैं। साथ ही ज्ञान कर्म और उपासना इन तीन रहस्य को समझाया जाता है। लेकिन राजनीति का जनेऊ धर्म से अलग होता है इसमें साम, दाम, दण्ड, भेद के चार धागे होते हैं और उसके रहस्य को हर कोई समझता भी है।

पिछले कुछ वर्षों में नरेंद्र मोदी की आंधी ने बड़े-बड़े परिवर्तन कर दिए। धर्मनिरपेक्षता की टोपी उतार कर राहुल ब्राह्मण बन गए, राम कभी थे ही नहीं कहने वाले राम के चरणों में पहुंच गए। शायद इसी काल को ध्यान में रखकर योगिराज श्रीकृष्ण ने कहा होगा कि परिवर्तन संसार का नियम है। लगता है राहुल गाँधी को भी एहसास हो गया है कि देश पर राज करने के सपने देखने हैं तो उनके लिए इफ्तार की दावत में मुसलमानों की जालीदार टोपी पहनकर सामने आने की बजाए खुद को जनेऊधारी हिन्दू दिखाना होगा। शायद कांग्रेस के इस खुले ऐलान से संघ के अधिकारियों के कानों में अमृत घुल गया होगा। उनका नारा भी है जो हिन्दू हित की बात करेगा, वही देश पर राज करेगा।

भले ही नेहरू ने धर्म और राजनीति को भरसक अलग रखा लेकिन उनकी बेटी इंदिरा गांधी कभी जनसंघ के दबाव में और कभी जनभावनाओं का दोहन करने के लिए, बाबाओं के चरण छूतीं या रूद्राक्ष की माला पहने काशी विश्वनाथ के ड्योढ़ी पर फोटो खिंचवाती नजर आई। इसके बाद अयोध्या में राम जन्मभूमि का ताला खुलवाने, कट्टरपंथी नेताओं के दबाव में विधवा मुसलमान औरतों को अदालत से मिले इंसाफ को पलटने, देश में आधी शरियत लागू करने वाले और नाव पर तिलक

....पिछले कुछ वर्षों में नरेंद्र मोदी की आंधी ने बड़े बड़े परिवर्तन कर दिए। धर्मनिरपेक्षता की टोपी उतार कर राहुल ब्राह्मण बन गए, राम कभी थे ही नहीं कहने वाले राम के चरणों में पहुंच गए। शायद इसी काल को ध्यान में रखकर योगिराज श्रीकृष्ण ने कहा होगा कि परिवर्तन संसार का नियम है। लगता है राहुल गाँधी को भी एहसास हो गया है कि देश पर राज करने के सपने देखने हैं तो उनके लिए इफ्तार की दावत में मुसलमानों की जालीदार टोपी पहनकर सामने आने की बजाए खुद को जनेऊधारी हिन्दू दिखाना होगा।...

लगाकर गंगा मैया की जय-जयकार करने वाले राजीव गांधी ही थे। शादी के बाद राजीव गांधी जब भी किसी पूजा-पाठ की जगह पर जाते थे, सोनिया उनके साथ रहती थीं।

लेकिन अब राहुल के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह भी खड़ी हो गयी है कि वह खुद को हिन्दू साबित कैसे करें? या इसका राजनितिक प्रमाणपत्र कहाँ मिलेगा? दूसरा सोलह संस्कारों में से एक जनेऊ संस्कार क्या अब राजनेताओं की बपौती या वोट मांगने का साधन बनकर रह जायेगा? ऐसा नहीं है कि राजनीति में धर्म के घालमेल का फार्मूला नरेंद्र मोदी का आविष्कार हो बल्कि यह तो सालों से चल रहा है बस फर्क इतना है कि 2014 के चुनावों से पहले अधिकांश नेतागण जालीदार टोपी पहने रोजा इफ्तियार पार्टियों में देखे जाते थे लेकिन अब हालात थोड़े से बदले। कई राज्यों में बड़ी-बड़ी हार के बाद याद आया कि क्रोशिया से बनी टोपी शायद लोगों को इतना नहीं लुभा रही है जितना माथे पर सजा त्रिपुंड तिलक भा रहा है। शायद तभी राबड़ी देवी के छट पूजा के फोटो अखबारों में छप रहे हैं। अखिलेश यादव हवन की तस्वीरें पोस्ट कर रहे हैं और लालू यादव के बेटे राजनीतिक रैली में शंख नाद कर रहे हैं।

कहा जा रहा है कि हो सकता है कल मार्क्सवादी भी ऐलान कर दे कि वह भी निराहार सुबह उठकर मंत्रों का जाप करते हैं या फिर बंगाल में काली या दुर्गा माता के मंदिरों में माथे टेकते नजर आयें। दरअसल सभी राजनैतिक दल समझ गये हैं कि भारत देश धर्म की राजनीति का प्रयोगशाला बन चुका है। धर्मनिरपेक्षता का चोला पुराना पड़ चुका है तो अब धर्म से जनेऊ लेकर ही क्यों न सत्ता का सुख भोगें? भले ही आज हम मंगल और चंद्रमा पर जाने की बात करते हैं लेकिन चुनाव में असली राजनीतिक भूमिका तो जातियां और धर्म ही निभाते हैं। ***- सम्पादक***

अयोध्या, राजनीति के आगे बेबस आस्था

.....भारत में मस्जिद का टूटना एक दुखद सन्देश की तरह है जबकि सब जानते हैं कि बाबरी मस्जिद का ढांचा गिराए जाने के बाद विश्व भर के मुस्लिमों में इसकी प्रतिक्रिया में सैकड़ों मंदिर तबाह कर डाले गये थे। अकेले बांग्लादेश में ही क्या-क्या हुआ। आप तसलीमा नसरीन की पुस्तक लज्जा से जान सकते हैं। बाबरी मस्जिद शहीद हुई थी यह सुनते-सुनते काफी वर्ष बीत गये पर क्या मस्जिदें सिर्फ भारत में ही शहीद होती हैं क्योंकि इस्लामिक मुल्कों में कोई महीना या सप्ताह ही ऐसा जाता होगा जब वहां किसी मस्जिद में विस्फोट न होता हो?.....

किसी नेता या राजनैतिक दल का अस्तित्व और भविष्य कितना होता है पता नहीं! लेकिन इस बात से कौन इंकार कर सकता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम या अन्य किसी महापुरुष का अस्तित्व हमारे प्राणों में बसता है और भविष्य में भी सदा बसता रहेगा। कहा जाता है 16वीं सदी में एक मुस्लिम आक्रान्ता द्वारा तोड़ा गया उनका एक मंदिर आज भी पुनर्निर्माण की बाट जोह रहा है। आस्था लगातार 25 वर्षो से कोर्ट का दरवाजा खटखटा रही है। आज हर किसी को याद है 6 दिसम्बर को बाबरी मस्जिद ढ़हाए जाने को 25 बरस पूरे गये। पर कितने लोग जानते हैं कि इससे पहले राम मंदिर कब टूटा था? शायद उन वर्षो की गिनती उँगलियों पर नहीं की जा सकती। हालाँकि केंद्र की सत्ताधारी पार्टी के चुनावी घोषणापत्र में राम मंदिर का मुद्दा हमेशा रहा है। पर संविधान, राजनैतिक दलों और कथित अल्पसंख्यकों के हित के एजेंडे को देखते हुए यथा स्थिति बनी हुई है।

भारत में मस्जिद का टूटना एक दुखद सन्देश की तरह है जबकि सब जानते हैं कि बाबरी मस्जिद का ढांचा गिराए जाने के बाद विश्व भर के मुस्लिमों में इसकी प्रतिक्रिया में सैकड़ों मंदिर तबाह कर डाले गये थे। अकेले बांग्लादेश में ही क्या-क्या हुआ आप तसलीमा नसरीन की पुस्तक लज्जा से जान सकते हैं। बाबरी मस्जिद शहीद हुई थी, यह सुनते-सुनते काफी वर्ष बीत गये पर क्या मस्जिदें सिर्फ भारत में ही शहीद होती हैं क्योंकि इस्लामिक मुल्कों में कोई महीना या सप्ताह ही ऐसा जाता होगा जब वहां किसी मस्जिद में विस्फोट न होता हो? या फिर ऐसा हो सकता है कि मस्जिदें सिर्फ हथौड़ों से शहीद होती हो, बम विस्फोटों और आत्मघाती हमलों से नहीं?

इसी वर्ष मोसुल में 800 साल पुरानी अल-नूरी मस्जिद को आई.एस.आई.एस. के विद्रोहियों ने उड़ा दिया था। तब कहीं भी इस विरोध में कोई प्रतिक्रिया सुनाई नहीं दी। न कहीं दंगे हुए, न इसके विरोध में बम ब्लास्ट, जैसे कि बाबरी के विरोध में मुंबई की जमीन हजारों लोगों के खून से सन गई थी। चलो भारत में तो बाबर की मस्जिद टूटी थी जोकि एक हमलावर था लेकिन 5 जुलाई, 2016 सउदी अरब में इस्लाम के पवित्र स्थलों में से एक मदीना में पैगंबर की मस्जिद के बाहर एक आत्मघाती विस्फोट किया गया। इसके विरोध में किसने प्रतिक्रिया दी, किसने विरोध दर्ज किया? चलो ये तो थोड़ी गुजरी बात हो गयी, पिछले महीने ही मिस्र के उत्तरी सिनाई में जुमे की नमाज के दौरान एक मस्जिद पर हुए आतंकी हमले में कम से कम 235 लोगों की मौत हुई थी और करीब इतने ही घायल हुए थे क्या वह मस्जिद नहीं थी या मरने वाले लोगों के अन्दर मजहब नहीं था? हर वर्ष न जाने कितने लोग मजहब बनाने या उसकी पुरातन भव्यता प्राप्त करने के लिए हजारों लोगों को शहीद करते हैं, उनकी गिनती किसी ऊँगली पर नहीं होती न कोई शोक और काला दिवस मनाया जाता लेकिन मात्र पत्थरों से बनी ईमारत के लिए हर वर्ष न जाने कितनी राजनीति होती है।

खैर वही बात करते हैं जो वर्तमान में लोगों को पसंद है और पसंद बनाई भी जा रही है तो फिलहाल सुप्रीम कोर्ट ने राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर 4 दिसम्बर से अपनी आखिरी सुनवाई शुरू की लेकिन पक्षकारों के वकीलों की दलीलें सुनने के बाद शीर्ष न्यायालय ने सुनवाई 8 फरवरी 2018 के लिए टाल दी गयी है। मुस्लिम पक्षकार सुन्नी वक्फ बोर्ड के वकील कपिल सिब्बल ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि जब भी मामले की सुनवाई होगी, कोर्ट के बाहर भी इसका गंभीर प्रभाव होगा। कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए 15 जुलाई 2019 के बाद इस मामले की सुनवाई करें। जबकि केंद्र सरकार ने बिना स्थगन के रोज सुनवाई की मांग कर रही है। यदि इस मामले की रोज सुनवाई भी होती है तो सभी पक्षों और सभी सबूतों की अनुवादित कापियां जांचने में कोर्ट कम से कम एक वर्ष का समय लग जायेगा। इस पर सिब्बल का कहना है कि 2019 के आम चुनाव में सत्ताधारी दल इस मसले से फायदा उठा सकता है। इससे साफ है कि वकील हो या राजनेता यहाँ लोगों की आस्था से ज्यादा अपनी राजनीतिक रोटियां सेकने की परवाह कर रहे हैं।

अयोध्या विवाद किसके हक में जायेगा इसका जवाब भविष्य के गर्भ में छिपा है। 2010 में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने अपने फैसले के बाद पिछले महीने शिया सेन्ट्रल वक्फ बोर्ड ने राम मंदिर-बाबरी मस्जिद विवाद मामले में सुलह का फार्मूला पेश किया था। शिया वक्फ बोर्ड ने कहा था कि विवादित जगह पर राम मंदिर बनाया जाए और मस्जिद अयोध्या में बनाए जाने के बजाए लखनऊ में बनाई जाए। इस मसौदे के तहत पुराने लखनऊ के हुसैनाबाद में घंटाघर के सामने शिया वक्फ बोर्ड की जमीन है। उस जगह पर मस्जिद बनाई जाए और मस्जिद का नाम किसी मुस्लिम राजा या शासक के नाम पर न होकर ''मस्जिद-ए-अमन'' रखा जाए। इस मसौदे के मुताबिक, विवादित जगह पर भगवान श्रीराम का मंदिर बने ताकि हिन्दू और मुसलमानों के बीच का विवाद हमेशा के लिए खत्म हो और देश में अमन कायम हो सके।

शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड के इस मसौदे का लोगों ने भी समर्थन किया लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने उनकी अपील यह कहते हुए खारिज कर दी कि शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड अयोध्या मामले में पार्टी नहीं है और 1949 से चला आ रहा एक धार्मिक और राजनितिक विवाद एक बार फिर अधर में लटक गया है। हालाँकि सत्तारूढ़ दल को यह भी पता है कि इस बार उसके पास कोई बहाना भी नहीं है। निचले स्तर से लेकर शीर्ष तक वही सत्ता में विराजमान है।

हालाँकि 1949 में शुरूआती मुद्दा सिर्फ यह था कि ये मूर्तियां मस्जिद के आँगन में पहले से कायम राम चबूतरे पर वापस जाएँ या वहीं उनकी पूजा अर्चना चलती रहे। लेकिन अब 2017 में अदालतों ने राजनितिक दलों के लम्बे सफर के बाद अब मुख्य रूप से ये तय करना है कि क्या विवादित मस्जिद कोई हिन्दू मंदिर तोड़कर बनाई गई थी या विवादित स्थल भगवान राम का जन्म स्थान है? दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा ये है कि क्या विवादित इमारत एक मस्जिद थी, वह कब बनी और क्या उसे बाबर अथवा मीर बाकी ने बनवाया? लेकिन अब इतिहास में हुई गलती को साढ़े तीन सौ साल बाद ठीक नहीं किया जा सकता। इसलिए सब मिलाकर यह मामला पूरे भारतीय समाज और संविधान-लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के लिए चुनौती बना खड़ा है। हर किसी के पास अपने सुझाव हैं पर सुझाव मानने वाले लोग कहाँ हैं? - ***राजीव चौधरी***

बोध कथा

धन रूपी पहाड़ पर दान की वर्षा करो

पाकिस्तान बनने से पूर्व एक दिन मैं मुलतान से आगे जा रहा था। डेरा इसमाईल खां पहुंचना था। दरिया से नौका में बैठकर नदी को पार करना था। गाड़ी जा रही थी बहुत तेज़। तभी बहुत ज़ोर से धक्का लगा। कई लोग अपनी सीटों से नीचे आ गिरे। गाड़ी रुक गई। गाड़ी रुकते ही कई लोग शोर मचाने लगे-टक्कर हो गई! मैं भी नीचे उतरा। इंजन की ओर चला यह देखने कि टक्कर किस वस्तु से हो गई है। कुछ लोग मुझसे पूर्व इंजन के पास हो आये थे। उनसे पूछा-''क्या हुआ?''

वे बोले-''रेल की लाइन पर पहाड़ आकर बैठ गया है।''

मैंने आश्चर्य से कहा-'लाइन पर पहाड़ कैसे आकर बैठ गया है?' उन्होंने कहा - "स्वयं जाकर देखो। रेत का पहाड़ रेल की पटड़ी पर बैठा है।''

मैंने वहां जाकर देखा कि वस्तुतः रेत का एक ऊंचा टीला पटड़ी के ऊपर है। चकित होकर मैंने कहा-''यह टीला पटड़ी के ऊपर आ गया है या कि पटड़ी नीचे चली गई है?''

वहां उस प्रदेश के लोग भी थे। उन्होंने कहा-''पटड़ी टीले के नीचे नहीं, टीला पटड़ी के ऊपर आ गया है। यह रेतीला प्रदेश है। तीव्र आंधी चलती है, तो रेत के पहाड़ उड़ने लगते हैं। उड़ते-उड़ते कभी-कभी पटड़ी के ऊपर आ बैठते हैं।''

मैंने पूछा-'क्या वर्ष-भर ये पर्वत इसी प्रकार उड़ते रहते हैं?' उन्होंने बताया-'नहीं, जब वर्षा हो जाय, तब नहीं उड़ते। तब रेत भी नहीं उड़ती।'

उस समय मुझे शास्त्र की बात स्मरण आई कि यह धन-रूपी पहाड़ उड़ने वाला है; एक स्थान पर बहुत समय नहीं रहता। दान-रूपी वृष्टि इस पर हो जाय तो फिर नहीं उड़ता।

ओ धनिको! दान की वर्षा करो इस धन पर, नहीं तो स्मरण रखो कि यह पर्वत उड़कर कहीं अन्यत्र चला जायेगा। यह उड़ने वाला पर्वत है।

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घट्यो नीर।
दान दिये धन ना घटे, कह गये दास कबीर।।

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पुस्तक परिचय

स्वामी श्रद्धानन्द

(एक विलक्षण व्यक्तित्व)

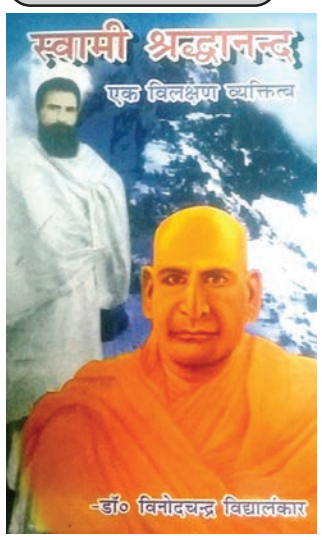

देश और धर्म को विपत्तिकाल में खड़ा देख एक इन्सान के अन्तस् की चीख जो उसे साधारण से महात्मा बना गयी. जब कुछ लोग मजहबी उन्माद में डूबे गरीब, दलित, अशिक्षित, छुआछूत से पीड़ित लोगों को धर्म के नाम पर अपने पाले में खीचने का प्रयास कर रहे थे तब आर्य समाज का एक सिपाही सीना संगीनों के सामने खोलकर खड़ा हो गया किन्तु देश का दुर्भाग्य तो देखिये कि देश में हो रहे दंगों के लिए एक जाँच कमेटी मोती लाल नेहरू की अध्यक्षता में बनाई गई थी, उस कमेटी ने अपनी जांच रिपोर्ट में यह लिखा कि स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि आन्दोलन के कारण देश में दंगे हुए ! इस ऊल-जलूल आरोप से बेपरवाह स्वामी जी ने स्पष्ट रूप से कहा कि जिस प्रकार मुसलमानों को यह अधिकार है कि वे गैर मुसलमानों को इस्लाम में आने की दावत दें, उसी प्रकार हिन्दुओं को भी अधिकार है कि वे अपने बिछड़े हुए भाईयों को वापस अपने घर में वापस ले आयें ! महात्मा गाँधी ने जोश में आकर सत्यार्थ प्रकाश और स्वामी श्रद्धानंद के विरुद्ध लेख लिख डाला और मुसलमानों के रुख का समर्थन किया! (मुसलमानों को लगा कि उनकी हर जायज और नाजायज माँगों को महात्मा गाँधी का समर्थन प्राप्त है!)-सन्दर्भ गुरुकुल पत्रिका 1940 दिसम्बर

यह पुस्तक स्वाध्याय व स्वाधीनता व गणतन्त्र दिवस के अवसर पर अपने ईष्ट मित्रों व रिश्तेदारों को सप्रेम भेंट हेतु आज ही आप भी प्राप्त कर सकते हैं-

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. नं. 9540040339

आर्य समाज कीर्तिनगर के आर्यवीर एवं वीरांगनादल का

21वां स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्य समाज कीर्तिनगर के आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना ने 21वें स्थापना दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम एस.डी.पब्लिक स्कूल जी ब्लॉक कीर्तिनगर में 3 दिसम्बर 2017 धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में आर्यवीरों एवं वीरांगनाओं ने रामायण के एक अंश पर नृत्य नाटिका, देश रंगीला....नृत्य नाटिका, झांसी की रानी पर नृत्य नाटिका, भ्रूण हत्या पर मार्मिक नाटिका बाल श्रमिकों पर हो रहे अत्याचारों पर नृत्य नाटिका, भारतीय सैना किस बहादुरी से कारगिल पर लड़ाई लड़ी इस पर भावुक नृत्य नाटिका, इत्यादि तथा 60 वीर-वीरांगनाओं ने अपने-अपने यज्ञ कुण्ड पर यज्ञ किया। यह रंगारंग कार्यक्रम आर्य वीर दल के संचालक, अधिष्ठाता तथा आर्य वीर ने अपने ही सामर्थ व बल बूते पर तैयार किया। कार्यक्रम इतना सुन्दर था कि महाशय धर्मपाल जी थोड़ी देर के लिए अपना आशीर्वाद देने आये थे लेकिन 3 बार उठते-उठते फिर बैठ गये यह केवल कार्यक्रम की रोचकता के कारण ही सम्भव हुआ। उन्होंने बच्चों को अपना आशीर्वाद बहुत ही भावुक मन से दिया और कहा कि खूब मेहनत करो और

महर्षि देव दयानन्द के मिशन को इसी रोचकता के साथ और आगे बढ़ाओ। इस कार्यक्रम हेतु बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए कीर्तिनगर से श्री मनोहर लाल कुमार चेयरमैन श्री सनातन धर्म सभा ने कहाा कि आर्य समाज यज्ञ के द्वारा बच्चों को बहुत अच्छे संस्कार दे रहा है मेरी शुभकामनाएं, डॉ. एस. पी. ब्योत्रा, गंगाराम अस्पताल श्रीमती कुसुम ब्योत्रा उपप्रधान सेवाप्रकल्प महिला मण्डल, श्री प्रेम अरोड़ा, समाजसेवी, श्रीमती वीना वीरमानी व श्री विपिन मल्होत्रा, निगम पार्षद, श्री गुलशन वीरमानी, सचिव केन्द्रीय मंत्री श्री हर्षवर्धन, श्री मन्नू भईया (दिल से संस्था) तथा अन्य गणमान्य निवासी श्री धर्मपाल आर्य व श्री विनय आर्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री शिव कुमार मदान, जनकपुरी, श्री एस.पी. सिंह, श्री राजेन्द्र दुर्गा, पश्चिम विहार, श्री प्रवेश आर्य, आर्य समाज बाली नगर, मानसरोवर गार्डन, रमेश नगर, सुदर्शन पार्क, मोतीनगर के समाजों के अधिकारी व सदस्यों ने हल्की ठंड के बावजूद पूरा कार्यक्रम बड़े उत्साह से देखा। पूरे कार्यक्रम को सर्वश्री राजू आर्य, बिट्टू आर्य, सुशील आर्य, अनिल आर्य, नीरज आर्य, मनीष आर्य, निरंजन आर्य, कृष्ण आर्य, प्रवीण आर्य, राजू कुमार, तरुण आर्य, जितेन्द्र आर्य, इत्यादि बच्चों ने बहुत जबरदस्त मेहनत करते हुए लगभग 15 दिनों से अभ्यास करते हुए तैयार किया।- ***सतीश आर्य, मंत्री***

मातृशक्ति

आहार

आहार का तात्पर्य है- बालकों का यानी हमारा भोजन। भोजन के सम्बन्ध में मुख्यत: पांच नियमों पर ध्यान देना अत्यावश्यक है। वे पांच नियम हैं-

1. क्या? 2. कितना 3. क्यों? 4. कब? और 5. कैसे? अर्थात्- 1. हम क्या खायें? 2. कितना खायें? 3. क्यों खायें? 4. कब खायें?

भोजन के सम्बन्ध में सबसे पहली ध्यान देने योग्य जो बात है वह है, हम क्या खायें? इसका संक्षेप में यदि कोई उत्तर हो सकता है तो यही कि हम वही खायें जोकि हमारे शरीर के लिये उपयोगी तथा लाभप्रद हो, जिसको खाकर हमारे शरीर की सब धातुएं बलवान्, परिपुष्ट तथा नीरोग बनकर शरीर में बल, वीर्य तथा आरोग्यता की वृद्धि हो। भोजन में ऐसे पदार्थों का समावेश करना चाहिए जो आरोग्यप्रद, पौष्टिक, सुपच तथा सात्त्विक हों। विशेषकर जो सज्जन अपने शरीर, मन बुद्धि और आत्मा को पवित्र और बलवान् बनाना चाहते हैं जिन्हें स्वास्थ्य, सौन्दर्य और निरन्तर यौवन की अभिलाषा है जो शरीर के सकल सेलों अर्थात् जीवनीय परमाणुओं को विकारों और विषैले कीटाणुओं से सुरक्षित रखना चाहते हैं जो ब्रह्मचर्य पालन द्वारा अपनी आयु को दीर्घ-आयु तथा पूर्ण-आयु बनाकर जीवन को सुखमय बनाना चाहते हैं जो योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि के द्वारा अपने जीवन को सर्वांगीण रूप से आदर्श बनाना चाहते हैं, उन्हें तो कम-से -कम सात्त्विक और पौष्टिक आहार का ही सेवन करना चाहिए। सड़े, गले, बासी, चटपटे अर्थात् अधिक मिर्च मसालों वाले तथा मादक पदार्थों का हमारे भोजन में सर्वथा बहिष्कार होना चाहिए। दुग्ध, घृत, दही, ताजे फल, मेवे, ताजे तथा हरे साग और उत्तम अन्न आदि पदार्थों का ही हमें सेवन करना चाहिए। यह पदार्थ शरीर में रस, रक्त, वीर्य आदि सब धातुओं की वृद्धि कर उन्हें पुष्ट तथा नीरोग बनाते हैं शरीर की जीवन शक्ति को स्थिर रखते हैं और धातुओं की विषमता को दूर करते हैं जोकि शरीर के निर्बल और बीमार होने का मुख्य कारण हैं। वास्तव में शरीर की सब धातुओं में समता के लाने और विषमता को दूर रखने के लिये ऐसे ही पदार्थों का सेवन करना चाहिए, जो शरीर की सब धातुओं को नीरोग और स्वस्थ बनाने वाले हों और जिनमें पौष्टिक तत्त्वों की प्रचुरमात्र हो। क्योंकि शरीर को स्वस्थ, बलवान तथा नीरोग बनाये रखने के लिये पौष्टिक तत्त्वों का होना परमावश्यक है। भोजन में पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक तत्त्वों के होने से युवा अवस्था बनी रहती है। बुढ़ापा जल्दी नहीं आता।

यहां हमने भोजन के पहले नियम अर्थात् ''क्या खायें'' के सम्बन्ध मे प्रकाश डाला है। अब भोजन के दूसरे नियम अर्थात् ''कितना खायें'' के सम्बन्ध में कुछ बताएंगे। खाद्य पदार्थ चाहे कितने भी पौष्टिक तथा आरोग्यप्रद क्यों न हों, किन्तु यदि उन्हें उचित तथा परिमित मात्रा में सेवन नहीं किया जाता तो वह कदापि शरीर के लिये लाभप्रद सिद्ध नहीं हो सकते।

अत: इन पौष्टिक तथा आरोग्यप्रद पदार्थों को भी हम उतना ही खायें जितना कि हमारे शरीर के लिये अत्यावश्यक हो या जितना हम सरलतापूर्वक पचाकर उसे अपने शरीर का अंग बना सकें। इसलिए क्या खायें के बाद दूसरा प्रश्न है, कितना खायें? जिसका संक्षेप में यही उत्तर है कि जितना हमारे शरीर को स्वस्थ और बलवान् तथा नीरोग बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है। आवश्यकता से कम खाना जहां शरीर की धातुओं का शोषण करता है, वहीं आवश्यकता से अधिक खाना शरीर की धातुओं में विकार उत्पन्न करना है जिससे शरीर में नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होकर शरीर बीमार तथा कमजोर बन जाता हे और ऐसे मनुष्य सुख और वैभव से हीन होकर सदा दीन और दु:खी ही बने रहते हैं। किसी कवि ने कैसा सुन्दर कहा है-

कुचेलिनं दन्त-मलावधारिणम्,
बह्वाशिनं नित्य-कठोर-भाषिणम्।
सूर्योदये चास्तमये च शायिनम्,
विमुञ्चति श्रीरपि चक्रपाणिम्।।

अर्थात् - जिस मनुष्य के शरीर तथा वस्त्र सदा मैले रहते हैं जिसके दांतों पर मैल जमा रहता है, जो मात्रा से अधिक बहुत ज्यादा भोजन करता हे, जो हमेशा कठोर वचन बोलता है, जो सूर्य के उदय हो जाने पर तथा अस्त होते समय सोता रहता हे, वह चाहे साक्षात् विष्णु भी क्यों न हो, उसका भी लक्ष्मी अर्थात् सुख, शान्ति, वैभव ओर कान्ति साथ छोड़ देते हैं। अत: हमारा भोजन परिमित मात्रा में होना चाहिए, न न्यून न अधिक। हितकर और परिमित भोजन खाने से न केवल सामान्य स्वास्थ्यवाले मनुष्य, प्रत्युत असाध्य रोगी भी स्वस्थ और नीरोग हो जाते हैं।

हम क्यों खाएं? इसका सीधा-साधा उत्तर है, अपने शरीर पोषण के लिए, दूसरे शब्दों में अपने जीवन धारण के लिए।

साभार : आचार्य भद्रसेनकृत
आदर्श गृहस्थ जीवन
- शेष अगले अंक में

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

दलित धर्म परिवर्तन क्यों करते हैं?

इतिहास इस बात का साक्षी है कि दलित लोगों के साथ कथित हिन्दुओं ने बुरा व्यवहार किया है, जिससे विवश होकर इन्हें धर्म परिवर्तन करना पड़ा। मंदिरों के निर्माण आदि में इन लोगों का सहयोग होने के बावजूद मंदिरों में इनका प्रवेश करना मना है।

सात समुद्र पार से पादरी आकर इनके बच्चों को शिक्षा दें तथा मानवता से भरा प्यार दें, तब इनके माता-पिता के लिए ये पादरी देवता जैसे क्यों न लगें? हम इन लोगों को दुत्कारें और ये मुल्ला और पादरी उन्हें अपनाने के लिए तैयार रहें, तब ये दलित क्यों न धर्मांतरण करें? इस देश के नेता अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए दल बदल करके लाभ उठाते रहें और सुख भोगते रहें तो ये दलित समाज के लोग अपने बच्चों के हित के लिए धर्मांतरण न करें।

मुझे याद है, आगरे जिले के एक गांव पनवाड़ी ने हरिजनों की बारात नहीं निकलने दी गई, क्योंकि दुल्हा घोड़ी पर सवार था। रिवाड़ी जिले के कालड़बात गांव में हरिजनों की इसलिए पिटाई की गई कि सभी अच्छे कपड़े पहनकर मेले में जा रहे थे। मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले के तलैया गांव में हरिजन औरतों की बुरी तरह पिटाई इसलिए की गई कि उन्होंने नाचने से मना कर दिया। इन सारी बातों को झेलकर भी दलित लोग हिन्दू धर्म को अपनाए हुए हैं, क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है?

दुर्भाग्य से आज देश का हर वर्ग राजनीतिज्ञों के पीछे भागता है, मानों राजनीतिज्ञ ही देश के भाग्य को बदल सकते हैं। आज सार्वजनिक जीवन में खोटे सिक्कों का चलन इतना अधिक हो गया है कि अच्छे-सिक्के यदि कहीं दिखाई भी देते हैं तो वे नकली मालूम पड़ते हैं। आज तो जितना अधिक तिकड़मी, भ्रष्ट, असामाजिक प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा। उसके लिए विकास के द्वार खुले हुए हैं। जिसे काल धन की सहायता मिलती है, वह राजनीति का मुखिया बन जाता है। जिसके पीछे कोई सम्प्रदाय, जाति, मजहब होता है, उसके संकेत पर सत्ता प्रतिष्ठान उठक बैठक लगाते हैं। विदेशी धन पर पलने वाला स्वदेशी का प्रवक्ता बन जाता है। देश की अखंडता को खंडित करने वाले राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार समझे जाते हैं।

उल्लेख करने मात्र से इसका समाधान नहीं है। समाधान इसमें है कि हम चुनौती को किस प्रकार से लेते हैं? हम प्रण करें कि स्वामी श्रद्धानन्द, डॉ. हेडगेवार के बताए रास्ते पर चलकर दलितों को हृदय से अपना खून समझें। उन्हें यह आभास न हो कि वे भारत में रहते हुए दूसरी श्रेणी के नागरिक है।, तभी हम धर्मांतरण को रोकने में सफल हो सकेंगे।

- मामचन्द रिवाड़िया, पूर्व मंत्री
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा के तत्त्वावधान में उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल परिवारों हेतु

19वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कार विधि में लिखा है कि परस्पर समान गुण-कर्म और स्वभाव वाले युवक-युवतियों का विवाह कराना चाहिए। स्वामी जी के इन्हीं वैवाहिक विचारों के आधार पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के निर्देशन पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कई वर्षों से आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। इन परिचय सम्मेलनों में उच्च व मध्यम आय वाले अथवा उच्च आय वाले सभी परिवारों के युवक-युवतियों का परिचय कराया जाता है।

अभी तक आयोजित वैवाहिक परिचय सम्मेलनों में यह बात अनुभव की गई कि अधिक आय वाले आभिजात्य वर्ग के परिवारों को इस प्रकार के सम्मेलन में उचित वर-वधू चयन में कठिनाई होती है। यही विचार कर इस बार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उच्च आर्य वाले एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल वर्ग के आर्य युवक-युवतियों के वैवाहिक परिचय सम्मेलन के आयोजन पर विचार किया गया है। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है कि आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति समान हो। ऐसे जनों के साथ ही परस्पर विवाह सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए। जीवन की इन्हीं शास्त्रीय मर्यादाओं के अनुरूप आयोजित उच्च शिक्षित-प्रोफेशनल वर्गीय आर्य विवाह योग्य युवक-युवतियों क परिचय सम्मेलन में भाग लेने हेतु स्वयं रजिस्ट्रेशन उच्च आय वर्ग (मासिक आय 50 हजार रुपये प्रतिमाह) वाले करावें तथा अन्यों को भी प्रेरित करें।

पंजीकरण शुल्क : 500/- का डिमाण्ड ड्राफ्ट पंजीकरण फार्म के साथ **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजना अनिवार्य है। पंजीकरण शुल्क सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोलबाग शाखा नई दिल्ली में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें।

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)
एस.पी. सिंह, दिल्ली संयोजक (09540040324)

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म्।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वाधान में

उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टेलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :..... गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/.....
.....व्यक्तिगत मासिक आय.....

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता:.....
.....
दूरभाष :..... मोबा.:..... ईमेल :.....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई - अविवाहित.....विवाहित..... । बहिन- अविवाहित.....विवाहित..... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक).....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) लगाएं : ☐ विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. **विशेष: प्रत्याशी की मासिक आय 50 हजार रु. से अधिक तथा उच्च शिक्षित प्रोफेशनल हो वह ही फार्म भरें।**

मैं.....घोषणा करता हूँ कि इस फार्म में मेरे द्वारा दी गई समस्त जानकारी एवं तथ्य पूर्णतया सत्य है।

दिनांक : .....

हस्ताक्षर अभिभावक/ प्रत्याशी

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, बी-ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

दिनांक : 4 फरवरी 2018, रविवार **समय :- प्रात: 10 बजे से**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428, श्री एस.पी. सिंह, संयोजक- दिल्ली क्षेत्र मो. 09540040324
श्री कृष्ण बवेजा प्रधान, मो. 9810327440, श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी मंत्री, मो 987132928 श्री यशपाल आर्य, कोषाध्यक्ष मो.9868328290

आर्य समाज, बी-ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

नोट : 1. ई-मेल एडरेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है
2. विकलांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्णसन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक - matrimony.thearyasamaj.org
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 500/- (पाँच सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।
7. रजिस्ट्रेशन शुल्क 500/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

Veda Prarthana - 24

**इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुर: कृण्वन्तो विश्वामार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्ण:।।**

**Indram vardhanto apturah krnvanto vishwam aryam. Apahananto aravnah.
(Rig Veda 9:63:5)**

Follow God's Teachings and Make the Whole World Noble

- Acharya Gyaneshwarya

Vardhantah indram Glorify God (Indra) who is Master of all wealth and prosperity, and is also the Universal Benefactor, apturah by personally following God's message and doing virtuous deeds as well as inspiring others to do the same, krnvanto vishwam aryam thus make the whole world noble. Aravnah apaghnanto by overcoming and destroying our own selfish and miserly tendencies and by helping others do the same (by becoming generous), move forward and progres in life.

God, our Universal Benefactor and Supreme Father is called Indra in the Vedas because He is Master of all spiritual and material wealth and prosperity in the universe. Through this mantra God addresses human beings and states that by doing virtuous deeds, first become a noble person i.e. an Arya yourself, and then help make other persons in your family, society. community, the nation and the world also Arya (noble) and virtuous pesons.

The first duty of every human being is to make his/her life progressively more virtuous and noble by ,making the following attributes an integral part of his/her life: acquiring virtuous knowledge, truth, patience, thoughtfulness, kindness, forgiveness, contol over senses and mind, hard work, generosity, selflesness and earning as much wealth and prosperity as possible by honest and fair means. Howerver, after accomplishing above stated attriutes do not close your eyes and ignore promoting same virtuous values in other family members, community, town, city, nation and the world for their welfare also. As long as others around you in the community are not virtuous you will not succeed in promoting and establishing an environment of virtuous values around you. Even if our own family members have virtuous values such as honesty, integrity, hard work, and follow other dictates of dharma as well as have true faith and devotion in God and do correct worship, yet as long as our neighbors and otherrs in the community are ignorant, have wrong beliefs and/or blind faith, are dishonest, poor or hungry, we will not create and establish an environment of peace and happiness around us nor be free from worries in our personal lives.

The most important and foremost method to promote nobleness in the world is to promote among all persons, a faith, love and devotion in a True God who is Omnipresent, Omnipotent, Omniscient, Supreme Consciousness, the Source of all bliss, Who is Eternal, Kind and Just as well as knows all our deeds and as Karmphaldata gives us appropriate rewards. Until a person has a deep abiding faith in the fact that all my actions are being watched by the Omnipresent God and I will be justly punished for bad deeds, especially if there is an opportunity at hand which is likely to lead to a personal financial or material gain (alos see mantra # 20). One must remember God at all times and follow truth, honesty and virtue at all times in thoughts words and actions. Moreover, true praise of God called Eeshwar-Stuti in the Vedic scriptures implies remembering God's various attributes and following His messegs at all times when performing one's deeds whereby one incorporates an element of God's attributes in one's personal life to the extent possible e.g. as God is Kind and Just, similarly, be kind and just to others. This is in contrast to wrong Eeshwar-Stuti where a person repeats God's name in a rote manner hundreds or thousands of times but makes no improvement in one's wrong habits or vices in life. By having a true faith and devotion in God, many virtuous values spontaneously become a part of a person's character and actions as well as bad values and vices are spontaneously destroyed. Our rishis statethat in nations where most persons follow God's message those nation prospers otherwise nations gradually disintegrate from within.

The second method to promote nobleness in the world is that virtuous and noble persons by their own example must strive to inspire and promote virtue and hard-work in all other persons they come in contact with. God has given us (based on our previous karmas) our body, mind and intellect as well as material things, we must use them appropriately to the best of our abilities in a virtuous manner. We should become hard working, determined, courageous and generous to do good deeds for ourselves and others. When a large number of persons in a society or nation become lazy, irresponsible, careless, callous, defeatist and/or start having blind faith or believe in predesting then that society or nation will suffer a downfall.

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें

समास प्रकरण – 33

गतांक से आगे....

कर्मधारय समास – यह समास उन दो शब्दों के मध्य होता है जिनका एक ही अधिकरण(आधार) हो। यह तत्पुरुष समास का ही एक भेद है।

उदाहरण– कृष्ण: च असौ सर्प: च= कृष्णसर्प:। यहां ''कृष्णसर्प:'' में प्रयुक्त ''कृष्ण'' वर्ण भी उसी शरीर में है जिसे सर्प कहा जा रहा है अत: इन दोनों शब्दों का आधार समान होने से समास हो गया।

२. नीलं च तत् कमलं च= नीलकमलम् ।

३. महान् च असौ आत्मा च= महात्मा।

४. महान् च असौ देव: च= महादेव:।

५. मुखम् एव कमल = मुखकमलम्।

६. सुन्दर: पुरुष:= सुपुरुष: (सुन्दर के अर्थ में ''सु'' का प्रयोग)।

७. कुत्सित: पुत्र:= कुपुत्र:(कुत्सित अर्थ में ''कु'' का प्रयोग)।

– क्रमश: –

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

धन्य थे वे आर्य सेवक

बहुत पुरानी बात है पण्डित श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक ऋषि दयानन्द के एक पत्र की खोज में कहीं गये। उनके साथ श्री महाशय मामराजजी खतौलीवाले भी थे। ये मामराजजी वही सज्जन हैं जिन्होंने पण्डित श्री भगवद्दत्तजी के साथ लगकर ऋषि के पत्रों की खोज के लिए दूर-दूर की यात्राएँ कीं, परम पुरुषार्थ किया। पूज्य मीमांसकजी तथा मामराजजी ने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचकर पुराने कागजों, पत्रों के बस्तों को उलट-पुलट करना आरम्भ किया। जिस घर में पत्र की खोज हो रही थी, उनका रिकार्ड देख-देखकर पं. युधिष्ठिरजी मीमांसक तो हताश होकर लौट आये। पत्र न मिला। मामराजजी वहीं डटे रहे। कुछ दिन और लगाये। वहाँ से ऋषि का पत्र खोजकर ही लौटे। मामराज जी कोई गवेषक न थे, लेखक न थे, विद्वान् न थे, परन्तु गवेषकों, लेखकों, विद्वानों व ज्ञान- पिपासुओं के लिए व ऋषि के पत्रों का अमूल्य भण्डार खोजकर हमें दे गये। उनकी साधना के बिना पण्डित श्री भगवद्दत्तजी व मान्य मीमांसकजी का प्रयास अधूरा रहता। कम पढ़े-लिखे व्यक्ति भी ज्ञान के क्षेत्र में कितना महान् कार्य कर सकते हैं, इसका एक उदाहरण आर्यसेवक मामराज जी हैं। जो जीवन में कुछ करना चाहते हैं, जो जीवन में कुछ बनना चाहते हैं-श्री मामराज का जीवन उनके लिए प्रेरणाओं से परिपूर्ण है। आवश्यकता इस बात की है कि युवक साहस के अंगारे मामराजजी की कर्मण्यता तथा लग्न को अपनाएँ।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

मनुस्मृति
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

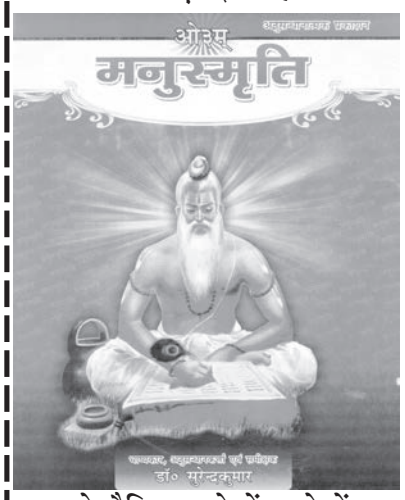

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : 600/-
विशेष छूट के साथ : 500/- में
(डाक व्यय अतिरिक्त)
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में
सिक्के वाले – मात्र 500/-रु. सैंकड़ा
बिना सिक्के – मात्र 300/-रु. सैंकड़ा
प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

MDH **हवन सामग्री**
मात्र 90/- किलो
5,10, 20 किलो की पैकिंग)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यों, श्रद्धानन्द का .....

बनकर प्रभु की आज्ञा का पालन करो। यदि हम अपना सुधार तथा आत्म कल्याण करना चाहें, तो स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ बन सकता है। ऊपर उठने के लिए इससे बढ़िया चरित्र और कोई न मिलेगा। इतने पतन से इतने ऊंचे उठे। इतिहास में लम्बी लकीर खींच दी। ऊंचाई की सभी बुलन्दियां छू लीं। इसके पीछे संकल्प, दृढ़ता व विश्वास था जो कहा उसे कर दिखाया। उनकी करनी व कथनी में एक रूपता थी।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन के प्रेरक पक्ष आर्य समाज के नेताओं, अधिकरियों, उपदेशकों, पुरोहितों आदि सभी को सन्देश दे रहे हैं-जीवन को ऊंचा उठाओ। चरित्र को पवित्र बनाओ। आचार विचार में सुधार लाओ। पद-स्वार्थ व अहंकार को छोड़ो। ऋषि मिशन के लिए समर्पित भाव से सेवक बनकर कार्य करो। जब तक हमारा आचार-वियार, व्यवहार और जीवन सुन्दर व श्रेष्ठ न होगा, तब तक हम दूसरों को प्रभावित और आकर्षित न कर सकेंगे। पहले के आर्य समाज में चारित्रिक गरिमा होती थी। आज इसमें गिरावट आयी है। जीवन बोलता हे। जीवन से जीवन बनता है। ऋषि के संपर्क में जो आया वह हीरा बन गया। आज इतने उपदेश, कथाएं, सम्मेलन, भाषण आदि होते हैं पर कहीं जीवन निर्माण नजर नहीं आता। शब्दों में खूब प्रचार हो रहा है। पहले के नेताओं अधिकारियों, संस्थाओं के संचालकों, उपदेशकों ओर पुरोहितों में धार्मिकता व आध्यात्मिकता होती थी जिसका स्थायी प्रभाव पड़ता था। आज सभी के जीवनों में ये दोनों चीजें घट रही हैं। मात्र प्रदर्शन रह गया है। जब तक धार्मिकता ओर आध्यात्मिकता जीवन में न आयेगी तब तक सच्चे अर्थ में ज्ञान, वैराग्य, त्याग तथा पदत्याग की भावना न आ सकेगी। आर्य समाज में जीवन मूल्यों की तेजी से गिरावट आ रही है। इसी कारण पद, स्वार्थ, अहंकार, विवाद, समस्या बढ़ रही है। ऋषि और आर्य समाज पीछे छूट रहा है। व्यक्ति और उसका स्वार्थ आगे बढ़ रहा है। आज का आर्य समाज सभा, संगठन संस्था आदि को अपने स्वार्थलाभ तथा महत्त्व को प्रदर्शित करने के लिए नियम कायदों को तोड़कर प्रयोग कर रहा है। पहले ऐसा नहीं था। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना घर-बार पद सब कुछ ऋषि मिशन के लिए न्यौछावर कर दिया। हमारी आन्तरिक स्थिति बड़ी गंभीर, शोचनीय ओर चिन्ता जनक है। सर्वत्र अराजकता, अनुशासन- हीनता एवं स्वार्थलिप्सा तेजी से फैलती जा रही है। न कोई किसी की सुनता है, न मानता है।

ऐसी भयावह तथा चिन्तनीय स्थिति में अतीत व महापुरुषों के प्रेरक तप-त्याग तपस्या और बलिदान पूर्ण जीवन हमें प्रेरित व जाग्रत कर सकते हैं आर्यो! प्रतिवर्ष महापुरुषों के जीवन घटनाओं, बलिदानों से सम्बंधित पूर्व तिथियां आती हैं। हम लोग जलसे जलूस, लंगर तक सीमित करके अपने कर्त्तव्य को पूरा समझ लेते हैं। कहीं रचनात्मक, प्रभावात्मक व निर्माणात्मक चेतना तथा ललक नजर नहीं आती। जो जागरूकता अैर उत्साह होना चाहिए, वैसा दिखाई नहीं देता। ये पर्व व बलिदान हमें जड़ता और निष्क्रियता से हटाकर कुछ करने की भावना जागृत करते हैं। आत्मचिन्तन की ओर प्रेरित करते हैं। सोच एवं विचार देते हैं-क्या खोया? कहां के लिए चले थे? कहां जा रहे हैं? स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हमें पुकार रहा है। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरित कर रहा है-उठो! जागो! संगठित हो जाओ। मिलकर चलो। ऋषि के मिशन को याद करो। परस्पर के विवादों और झगड़ों को त्याग आत्म विश्लेषण करो। चरित्र को ऊंचा उठाओ। अपने दायित्व और कर्त्तव्यों को संभालो। तुम्हारे ऊपर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आज चारों ओर भयंकर अविद्या, जड़ता, अन्धविश्वास ढोंग पाखण्ड आदि तेनी से बढ़ व फैल रहा है। वेद विद्या लुप्त होती जा रही हैं धर्म भक्ति और परमात्मा व्यापार बन रहे हैं। सम्प्रदायों का जाल बिछ रहा है। नकली सन्त, महन्त, महाराज गुरु ज्ञानी आदि गली-गली फैल रहे हैं। दानवता अट्टाहस कर रही है। मानवता रो रही हैं, नैतिक मूल्यों और मर्यादाओं का तेजी से क्षरण हो रहा है। संस्कृति व सभ्यता के नाम पर भोंडा, नग्न व विद्रप स्वरूप दिखाया जा रहा है।

ऐसी विकट स्थिति में आर्यो! विचार करो। कौन देश-धर्म जाति संस्कृति को सही विचार, दृष्टि और सोच दे सकता है। यदि कहीं निर्दोष, विचार आदर्श तथा मूल्यों पर नजर टिकती है तो केवल वैदिक विचारधारा पर क्योंकि इसके चिन्तन में समग्रता एवं पूर्णता है। आज समय की मांग और जरूरत है समस्त आर्य जगत को भेद-भाव, विवाद और स्वार्थो को भुलाकर अपने स्वरूप, उद्देश्य व कर्त्तव्य को समझने की महापुरुषों ने जिन उद्देश्य आदर्शो, परम्पराओं और वैदिक धर्म की धारा को अजग्र प्रवाहित रखने के लिए बलिदान दिए। अपना सर्वस्व त्याग दिया। जीवन लगा दिए। अनेक दु:ख व यातनायें सही। उनकी आत्मायें पुकार रही हैं। उनके बलिदानों को सार्थक करो। सेवक बनकर उनके कार्यो को आगे बढ़ाओ। जो विरासत में हमें विचारधारा और जीवन मूल्य मिले हैं उनको फैलाना, आगे बढ़ाना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। कुछ करने कराने का संकल्प और व्रत लें। यही श्रद्धनन्द बलिदान दिवस की मूल चेतना, प्रेरणा और सन्देश है। - ***बी.जे. 29, शालीमार बाग, दिल्ली-110088***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

धर्मप्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन

सभी धर्मप्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि आर्य समाज के कार्यो और देश-धर्म सम्बन्धित कार्यो में विशेष योगदान और सेवाएं प्रदान करने वाले आर्य नेताओं, आचार्यो, विद्वानों, प्रचारकों, पुरोहितों और आर्य वीर-वीरांगनाओं से सम्बन्धित विशेष घटनाएं जैसे विधवा-विवाह, छुआछूत, स्त्री-शिक्षा, वेद-प्रचार, पाखण्ड-खण्डन, जात-पात बंधन आदि से सम्बन्धित या कोई अन्य प्रेरक प्रसंग आदि की जानकारी जो आज तक प्रकाशित नहीं हुई हो और आपकी जानकारी में है तो आप कृपया **सम्पादक** के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ई मेल कर दीजिए। हमारा प्रयास रहेगा कि आपके द्वारा प्रेषित सूचना/घटनाक्रम को प्रकाशित कराया/किया जाए। - ***सम्पादक***

आर्यसमाज महू के तत्वावधान में
गायत्री महायज्ञ

गायत्री महायज्ञ समिति (आर्यसमाज महू) के तत्वावधान में 24 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 2017 तक इन्दिरा गांधी ग्राउंड (टाउन हॉल के पीछे) महू (म.प्र.) में गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर 24 दिसम्बर को शोभायात्रा तथा प्रतिदिन प्रात: 8 बजे से 10 बजे तक डॉ. योगेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ, वेद कथा, भजन,व्याख्यानमाला के आयोजन होंगे। अधिक जानकारी के लिए 07324-273201, 226566, 9826655117 से सम्पर्क करें।

- ***प्रकाश आर्य, संयोजक***

संगीतमय श्रीराम कथा

आर्यसमाज हापुड़ (उ.प्र.) द्वारा 17 दिसम्बर से 22 दिसम्बर तक संगीतमय भव्य श्रीराम कथा का आयोजन किया जा रहा है। कथाकार श्री कुलदीप आर्य जी होंगे। - ***आनन्द प्रकाश आर्य, प्रधान***

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2018 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

म.भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का
प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के तत्त्वावधान में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 29-30-31 दिसम्बर, 2017 को इन्दिरा गांधी ग्राउंड (टाउन हॉल के पीछे) महू (म.प्र.) में आयोजित किया जा रहा है। समस्त कार्यक्रम विभिन्न सत्रों एवं सम्मेलनों के रूप में आयोजित होगा। अधिक जानकारी के लिए आर्यसमाज महू, इन्दौर, दूरभाष - 07324-273201, 226566, 9826655117 से सम्पर्क करें।

- ***इन्द्र प्रकाश गांधी, प्रधान***

यजुर्वेद शतकम महायज्ञ

आर्यसमाज गुरु हरिकिशन मार्ग, रेलवे रोड शकूर बस्ती दिल्ली-34 के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में 15 से 17 दिसम्बर, 2017 को यजुर्वेद शतकम महायज्ञ का आयोजन आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में आयोजित किया जा रहा है। पूर्णाहुति एवं समापन 17 दिसम्बर को प्रात: 7:30 से 1 बजे तक सम्पन्न होगा। श्री सोमनाथ पुरी जी अध्यक्ष एवं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी मुख्य अतिथि होंगे। - ***एस. एन. पुरी, प्रधान***

पाठकगण कृपया ध्यान दें

आर्य सन्देश के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य सन्देश की कुछ प्रतियां डाक से प्रेषित करने के उपरान्त कुछ दिनों बाद डाक वितरित न होने के कारण कार्यालय में वापस आ जाती हैं। आप सभी सदस्यों से प्रार्थना है कि आप अपना सम्पर्क सूत्र (दूरभाष/चलभाष) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में सम्पादक को अतिशीघ्र प्राप्त कराने की कृपा करें ताकि आपसे सम्पर्क कर कारण का स्पष्टीकरण हो सके।

- ***सह व्यवस्थापक, 9540040324***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14/15 दिसम्बर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 दिसम्बर, 2017

ओ३म्

91 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शोभायात्रा

सोमवार, 25 दिसम्बर, 2017

यज्ञ :- प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक
स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

भव्य शोभायात्रा का प्रारम्भ प्रातः 10 बजे

विशाल सार्वजनिक सभा

समय : दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली - 2

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।
नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था सभा की ओर से रहेगी ।

-: निवेदक :-

महाशय धर्मपाल	सतीश चड्ढा	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य
प्रधान	महामन्त्री	प्रधान	महामन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य		दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	

प्रतिष्ठा में,

लगातार बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

ओ३म्
thearyasamaj.org

35 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

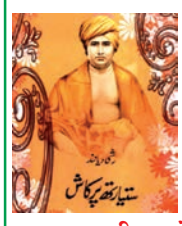

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

(उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य मात्र
100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी
(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज) के विशेष सहयोग से
केवल मात्र 70/- में
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

शुद्ध तांबे से निर्मित
वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 09540040339

आर्यजनों के लिए खुशखबरी
महर्षि दयानन्दकृत
सम्पूर्ण साहित्य एवं
सत्यार्थ प्रकाश
(18 भाषा में)

मूल्य मात्र
अब सीडी में उपलब्ध 30/- रुपये

94 साल की उम्र में भी जब मेरे दांत ठीक रह सकते हैं तो आपके क्यों नहीं ?

एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
(बिना तम्बाकू के)

23 जड़ी बूटियों एवं अन्य पदार्थों से निर्मित आयुर्वेदिक दंत मंजन

यह दंत मंजन ही नहीं दांतों का डाक्टर है।

महाशय धर्मपाल, चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा0) लि0

इसके सुबह – शाम नियमित प्रयोग से दांतों का दर्द, पायेरिया, मुंह की दुर्गन्ध, मसूड़ों की सूजन, रक्त बहना, ठण्डा गरम पानी लगना, दांतों में जमी मैल छुड़ाने के लाभ के साथ–साथ दांत सारी उम्र चलें, पूरी तरह सुरक्षित व मजबूत रहें।

इसे नीचे बताई गई प्रयोग विधि अनुसार एक सप्ताह नियमित रूप से इस्तेमाल करें और फर्क महसूस करें। फायदा न होने पर पैसे वापस पायें।

प्रयोग-विधि सबसे पहले मुलायम टूथ ब्रश से दांतों में मंजन करें। उसके बाद थोड़ा मंजन बायें हाथ की हथेली पर डालकर अपने दायें हाथ की उंगली से दांतों और मसूडों पर आहिस्ता-आहिस्ता मलें। दांतों के अंदर के हिस्से को भी अपने अंगूठे से मलें। रात को सोने से पहले, सुबह उठने के बाद। अगर दांतों में दर्द होता हो तो दांतों में मंजन करके 10 मिनट के बाद थूक दें, कुल्ला न करें।

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015
फोन नं० 011-41425106 - 07 - 08
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

शाह जी दी हट्टी
दुकान नं० 6679, खारी बावली,
दिल्ली - 110006 फोन नं० 011 - 23991082

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह